



भा० अ०
७५

आसुर जो भाव सो मेरे प्रभावकू देखिके तत्काल नष्ट होइगो ६६ इति श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽष्टमस्कन्धे बलिवामनसंवादीनामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥ * ॥ * ॥
 (अथो विंशोऽध्यायः सुतलसपितामहे ॥ उपेक्ष्य दिवंगत्वा पूर्ववन्मोदते हरिः १ तैस्सके अध्यायमे प्रह्लादसहित बलिं सुतलमे गये संते इन्द्र है सो वामन जी करिके सहित स्वर्ग में पहिलेहि
 सों आनन्दकू प्राप्त होत भयो यह वर्णन करै हैं ?) सुकदेवजी कहै हैं पानभाव सब सायुज के संमत आसुर की कलान करिके आकुल हैं नेत्र जाके भक्ति करिके उत्कण्ठित हाथ जोरे जो बलि
 सो ऐसे कहत जो पुरातन पुरुष ताहि गद्गद वाणी करिके बोलत भये १ बलि कहै हैं अहो तुमकू प्रणाम के लिये उद्यम कियो शरण आये जे भक्त तिनकों जो अर्थ ताकी जो विधि तामें सावधान
 होहु जो अनुग्रह लोकापालनने देवतानने पहले न पायो सो अनुग्रह नीच जो असुर भैं तामें अपेय कियो २ सुकदेवजी कहै हैं ऐसे कहिके हरिकू महादेव सहित ब्रह्माकू प्रणाम करिके असुरन सहित
 भाव आसुरः ॥ दृष्ट्वा मदनुभावं सद्यः कुर्यो विनङ्क्ष्यति ३६ इति श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽष्टमस्कन्धे बलिवामनसंवादीनामद्वाविंशोऽध्यायः २२
 श्रीशुक उवाच ॥ इत्युक्त्वन्तं पुरुषं पुरातनं महानुभावोऽखिलसायुसंमतः ॥ बद्धाञ्जलिर्बाष्पकलाकुलेक्षणो भक्त्युद्गलोगद्गयागिराऽब्रवीत् १ बलिरुवाच ॥
 अहो प्रणामाय कृतः समुद्यमः प्रपन्नमङ्गलार्थविधौ समाहितः ॥ यल्लोकपालेस्त्वदनुग्रहोऽभैरलब्धपूर्वापसदेऽसुरोऽपि तः २ श्रीशुक उवाच ॥ इत्युक्त्वा हरिमान
 म्प ब्रह्माणसंभवंततः ॥ विवेश सुतलं गीतो बलिर्मुक्तः सहासुरैः ३ एवमिन्द्राय भगवान् प्रतपानीयत्रिविष्टपम् ॥ पूरयित्वाऽदितेः काममशासत्तकलं जगत्
 ४ लब्धप्रसादं निमुक्तं पौत्रवंशधरं बलिम् ॥ निशाम्य भक्तिप्रवणः प्रह्लाद इदमब्रवीत् ५ प्रह्लाद उवाच ॥ नेमं विरिञ्चो लभते प्रसादं न श्रीर्निशर्वाः किमुता परे
 ते ॥ यन्नोऽसुराणामिदुर्गपालो विश्वाभिवन्द्यैरपि वन्दिताङ्गिः ६ यत्पादपद्ममकरन्दनिषेवणेन ब्रह्मादयः शरणदारुणवते विभ्रुतीः ॥ कस्माद्यं कुमुन
 यः खलु योनयस्ते दाक्षिण्यदृष्टिपदवीं भवतः प्रणीताः ७ चित्रं तवेहितमहोऽमितयोगमायालीलाविमृष्टभुवनस्य विशारदस्य ॥ सर्वारमनःसमदृशो विप
 मः स्वभावो भक्तप्रियोपदासिकल्पतरुस्वभावः ८ श्रीभगवानुवाच ॥ वत्स प्रह्लाद भद्रे ते प्रयादिसुतलालयम् ॥ मोदमानः स्वपौत्रेण ज्ञातीनां सुखमावह ९
 छोड़िदिये जो बलि सो प्रसन्न होइके सुतल में प्रवेश करत भये ३ ऐसे भगवान् इन्द्रके अर्थ स्वर्ग दिवाइके अदिति कों काम करिके पूर्ण करत सब जगत् कों पालन करत भये ४ पायो हे प्रसाद
 नाने बन्धन तें छुट्यो बंधकों करनचारो नाती बलि ताहि देखिके भक्ति करिके नष्ट जो प्रह्लाद सो यह बोलत भये ५ या प्रसाद कू ब्रह्मा न पायो लक्ष्मी न पाई महादेव न पायो और कहाँ तें
 पावेंगे जातें विश्व करिके बन्दित तिन करिके बन्दित है चरण जिनकों ऐसे जो तुम सो हमारे असुरनके दुर्गपालक भये ६ हे शरणके देनवारे ! जिनके चरणारविन्द कों जो मकरन्द ताके सेवन
 करिके ब्रह्मादिक विभ्रुति हैं तिनहें भोग करै हैं दुष्टहें मति जिनकी उग्रहें जाति जिनकी ऐसे जे हम ते तुम्हारी कृपादृष्टि ताकी जो पदवी ताहि कौन हेतुमें प्राप्त भये ७ तुम्हारी हित बड़ो विचित्रहें अ
 चित जो योगमाया ताकी जो लोछा ता करिके रचे हैं भवन जाने सर्वज्ञ समदर्शी तिनकों विषम स्वभाव जातें कल्पवृक्ष कैसो है स्वभाव जिनकों भक्तनकूप्यरिहो ८ भगवान् बोले हे बेटा ! हे ! हू द !

अ०
३२

७५